भारतीय वाङ्मय

हिन्दी तथा अहिन्दीभाषी क्षेत्रों के साहित्यिक-सांस्कृतिक समाचारों की मासिक पत्रिका

वर्ष 4 | **अगस्त** 2003 | **अंक** 8

भ्रष्टाचार हमको अन्दर ही अन्दर पूरी तरह खाए जा रहा है। भ्रष्टाचार अब लूट में बदल गया है। हर जगह हर प्रकार की लूट हो रही है।

यह अत्यन्त क्षोभ की बात है कि प्रकाशन जैसे सम्मानजनक व्यवसाय में भी भ्रष्टाचार पूरी तरह व्याप्त हो गया है। पुस्तकों का मूल्य काफी बढ़ता जा रहा है। सामान्य पाठक पुस्तक खरीदने की क्षमता खोता जा रहा है। ऐसे में यही आशा थी कि हमारे विद्यालय, पुस्तकालय आदि इस कमी को कुछ पूरी करेंगे। पर इनके संचालकों ने इनकी हालत भी खराब कर रखी है। ऐसा नहीं है कि यह स्थिति नियामकों को मालूम न हो। पर वातावरण इतना दूषित हो चुका है कि कोई कुछ करने को तैयार नहीं। **— बिशन टंडन**

❑ ❑ ❑

साहित्यकार एक सामाजिक प्राणी है उसे समाज को बेहतर बनाने की दृष्टि विकसित और विस्तृत करनी चाहिए। **मौजूदा राजनीति धन-पशुओं और गुण्डों के हाथ का खिलौना है।** लेखक को आगे आकर जनशक्ति की जनचेतना को जागृत करके एक नये समाज के निर्माण की दिशा में पहल करनी चाहिए।

आज पूरे साहित्य में समाज की कोई रुचि नहीं रह गई है। आखिर इसके लिए कौन जिम्मेदार है?

मैं इससे बिल्कुल सहमत हूँ। यदि हम हिन्दी की बात थोड़ी देर के लिए छोड़ दें तो हम पाते हैं कि हिन्दी प्रकाशक भी इस अरुचि के लिए कम जिम्मेदार नहीं है।

पुस्तकें खरीदकर पढ़ने की आदत डालें। यदि वे पुस्तकें नहीं खरीदते हैं तो उन्हें पाठक की पात्रता के योग्य कैसे समझा जाएगा। मैं तो उस पाठक की प्रतीक्षा में हूँ जो डंडा लेकर लेखक से जूझे कि आखिर वह लेखक गुणहीन साहित्य का सृजन क्यों करता है? आइये आप और हम ऐसी सुखद प्रतिरक्षा के मायाजाल के सहभागी बनें। **— डॉ० गंगाप्रसाद विमल**

❑ ❑ ❑

पुस्तक समीक्षक साहित्य के सत्ता संजाल का एक जरूरी पाया है, नए शोधार्थी, विद्यार्थी, साहित्य प्रेमी, भावी समीक्षक सभी इसमें शामिल हैं वे एक ऐतिहासिक काम कर रहे हैं। वे नहीं जानते तो जानना चाहिए। कूड़ा-करकट साफ करना, कूड़े-कचरे में से काम का सामान छाँटना, साहित्य के विराट समकालीन समाजशास्त्र का नक्शा बनाना है। इन अनन्त छोटे-छोटे, मेहनती, चालू, भोले, तेज, पढ़ाकू, पढ़ने के चोर, हिसाबी किताबी अनंत युवा समीक्षकों का अहसानमन्द होना चाहिए कि वे ऐतिहासिक कार्य कर रहे हैं। **— सुधीश पचौरी**

समाचार पत्रों का दायित्व

आज हिन्दी में प्रतिवर्ष हजारों पुस्तकें प्रकाशित हो रही हैं, क्या पाठकों को उनकी जानकारी हो पाती है? पुस्तकों की जानकारी पाठकों तक पहुँचा पाना सुविधाजनक नहीं है। प्रत्येक पुस्तक एक इकाई है, अन्य वस्तुओं की भाँति उनको विज्ञापित करना सरल नहीं है।

पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से नई पुस्तकों की जानकारी पाठकों तक पहुँचती रही है। इससे पत्र-पत्रिकाओं के साथ-साथ पाठकों की पठन रुचि का भी विकास हुआ। किन्तु अब जबकि हिन्दी समाचार-पत्रों का विशाल उद्योग स्थापित हो गया। एक-एक अखबार दस से तीस-तीस नगरों से निकल रहे हैं, करोड़ों की संख्या में उनके पाठक हैं, वे केवल उपभोक्ता सामग्री और राजनीतिक-अपराधिक समाचारों के माध्यम बन गये हैं। इन समाचार-पत्रों के सप्ताह में अनेक पूरक निकलते हैं। बालीवुड के रंग-बिरंगे चित्रों और चटपटी सामग्री से भरे रहते हैं, या नवीनतम उपभोक्ता सामग्री की जानकारी कराते हैं। पुस्तकें उनके दायरे में नहीं आतीं। यदि सप्ताह में एक पृष्ठ पुस्तकों से संबद्ध सामग्री (परिचय, समीक्षा, नई पुस्तकों की सूचना) इन पत्रों में दी जाय, इससे पाठकों में पुस्तकों के प्रति रुचि जागृत होगी और पाठकों में अध्ययन प्रवृत्ति का विकास और स्तर उन्नत होगा।

इलेक्ट्रॉनिक मीडिया ने तो शून्यता ही व्याप्त कर दी है, पाठकों में पठन-पाठन की रुचि का ही विनाश कर दिया है। यह बौद्धिक शून्यता भावी पीढ़ी को किधर ले जा रही है? प्रिण्ट मीडिया हो या इलेक्ट्रॉनिक मीडिया दोनों का दायित्व है कि पाठकों की रुचि का विकास करे न कि उनमें विकृति लाये। किन्तु पुस्तकों की जानकारी पाठकों तक पहुँचे कैसे? दूरस्थ स्थानों पर कस्बों में गाँवों में रहने वाले पाठक जिनकी स्वाध्याय में रुचि है उन्हें पुस्तकों की जानकारी नहीं हो पाती। समाचार-पत्र जो जानकारी के सबसे बड़े माध्यम है, वे इस विषय में पूर्णतया उदासीन हैं।

दक्षिण भारत का ख्यातिप्राप्त अंग्रेजी अखबार 'हिन्दू' जो दिल्ली सहित 11 स्थानों से एक साथ प्रकाशित होता है, प्रति सप्ताह नई पुस्तकों की जानकारी प्रमुख पुस्तकों की समीक्षा, यहाँ तक कि तमिल, तेलुगु, मलयालम, कन्नड़ तथा हिन्दी पुस्तकों की भी समीक्षा प्रकाशित करता है। शब्दों के प्रयोग पर सामग्री देता है और विशिष्ट साहित्यिक सामग्री प्रकाशित करता है। क्या उत्तर भारत के विशेषकर हिन्दी समाचार-पत्रों के लिए यह विचारणीय नहीं है?

क्या हिन्दी सड़क से संसद तक की भाषा बनी रहेगी, या उसमें सांस्कृतिक बोध और उत्तरदायित्व का सृजन भी होगा। क्या साहित्य और संस्कृति से शून्य हिन्दी भाषा को संयुक्त राष्ट्र की आधिकारिक भाषा बनायेंगे? देश के प्रहरी समाचार-पत्र अपने इस दायित्व को कब समझेंगे?

— पुरुषोत्तमदास मोदी

स्मृति-शेष

भीष्म साहनी

देश विभाजन की त्रासदी झेलने वाले कथाकार भीष्म साहनी का शुक्रवार 11 जुलाई को शाम 7 बजे सिर की धमनियाँ फटने से दिल्ली के एस्कॉर्ट्स अस्पताल में निधन हो गया। 8 अगस्त 1915 को रावलपिंडी (पाकिस्तान) में जन्मे भीष्म साहनी देश विभाजन के बाद भारत आये। आर्य समाजी वातावरण में पले-बढ़े भीष्म साहनी हिन्दू, सिक्ख, मुसलमान सभी की जीवन शैली से परिचित हुए। संस्कृत-हिन्दी की घर में सीखी उर्दू और अंग्रेजी स्कूल में पढ़ी। 1937 में गवर्नमेंट कालेज, लाहौर से अंग्रेजी साहित्य में एम०ए० किया। 1958 में पंजाब यूनिवर्सिटी से पी-एच०डी० की।

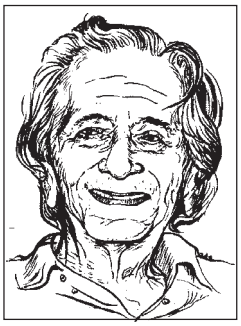

भारत आने के पूर्व घर का व्यापार देखते थे। विभाजन के बाद भारत आये। पत्रकार बने और इप्टा से जुड़ गये। कुछ दिन अम्बाला और अमृतसर में अध्यापन किया। 1950 में दिल्ली आये और दिल्ली विश्वविद्यालय में साहित्य के प्राध्यापक हो गये।

1957 से 63 तक वे रूस में रहे जहाँ विदेशी भाषा प्रकाशन गृह, मास्को में महत्त्वपूर्ण लेखकों की साहित्य कृतियों का रूसी से हिन्दी में अनुवाद किया। रूसी लेखकों में विशेषकर टॉलस्टाय, आस्ट्रोवस्की, इटमोव आदि की रचनाओं का अनुवाद किया।

1965-67 तक 'नई कहानियाँ' का सम्पादन किया। प्रगतिशील लेखक संघ तथा अफ्रीकी एशियाई लेखक संघ से भी संबद्ध रहे। 1993-97 तक वे साहित्य अकादमी की कार्यकारिणी समिति के सदस्य थे।

साहनीजी ने अनेक पुरस्कार सम्मान प्राप्त किये—1975 में साहित्य अकादमी पुरस्कार, 1975 में पंजाब सरकार का शिरोमणि लेखक पुरस्कार, 1980 अफ्रीकी एशियाई लेखक संघ का लोटस पुरस्कार, 1983 में सोविट लैंड नेहरू पुरस्कार। 1988 में भारत सरकार ने आपको पद्मभूषण से सम्मानित किया। भीष्म साहनी का पूरा परिवार साहित्यकार, कलाकार था। भाई बलराज साहनी, पत्नी संतोष प्रसिद्ध कहानी लेखक थे।

भीष्म साहनी की प्रमुख कृतियाँ—

उपन्यास—झरोखे (1967), कड़ियाँ (1970), तमस (1974), बसंती (1978), मय्यादास की माड़ी (1988), कुन्तो (1994), नीलू नीलिमा नीलोफर (2000)।

कहानी—भाग्य रेखा (1953), पहला पाठ (1951), भटकती राख (1966), पटरियाँ (1973), वाङ् चू (1973), शोभा यात्रा (1981), निशाचर (1983), पाली (1989), डायन (1998)।

नाटक—हानूश (1977), माधवी (1984), कबिरा खड़ा बाजार में (1985), मुआवजे (1993), रंग दे बसंती चोला।

निबन्ध और साक्षात्कार—अपनी बात, मेरे साक्षात्कार।

जीवनी तथा आत्मकथा—बलराज माई ब्रदर (अंग्रेजी में), आज का अतीत (आत्मकथा)।

बच्चों के लिए—गुलेल का खेल

भीष्म साहनी बहुआयामी सम्पूर्ण रचनाकार थे, लेखक, अनुवादक, रंगमंच अभिनेता, वक्ता, प्रगतिशील आन्दोलन में अग्रणी। उन्होंने पूरे जीवन न सिर्फ लेखन किया बल्कि उसे जिए भी—नाटकों-फिल्मों में अभिनय करने से लेकर सड़क पर प्रदर्शन करते तक में। अपनी सुप्रसिद्ध रचना 'तमस' पर बने टी०वी० धारावाहिक में अभिनय भी किया।

'झरोखे' में उन्होंने एक आर्यसमाजी संस्कारों वाले मध्यवर्गीय परिवार में घटित छोटी-छोटी घटनाओं को स्मृति-चित्रों के रूप में संजोया। 'तमस' भीष्म साहनी के भोगे हुए यथार्थ की कहानी है। 1947 के मार्च-अप्रैल में हुए भीषण साम्प्रदायिक दंगे की पाँच दिनों की कहानी इस रूप में प्रस्तुत की है कि हम देश-विभाजन के पूर्व की सामाजिक मानसिकता और उसकी अनिवार्य परिणति से परिचित हो जायँ। यह उस समय एक प्रामाणिक रचनात्मक दस्तावेज है।

भीष्मजी की 16 वर्ष की अवस्था में लिखी गई पहली कहानी 'नीली आँखें' अमृतराय ने 'हंस' में प्रकाशित की थी। 'चीफ की दावत' बूढ़ी माँ के घर में बूढ़ी माँ के फालतू हो जाने की व्यथा कथा है। 'अमृतसर आ गया है' भयावह त्रासदी को चित्रित करती बेजोड़ कहानी है।

शताब्दियों में ऐसा कथाकार जन्म लेता है। प्रेमचंद के बाद बीसवीं शताब्दी का यह जीवन्त साहित्यकार था जिसने जीवन जीया ही नहीं उसे भोगा और उसे कलम से उतारा ताकि आने वाली शताब्दी उसे गहराई से महसूस करे।

प्रधानमंत्री श्री अटलबिहारी वाजपेयी के शब्दों में श्री साहनी के निधन से देश ने एक ऐसा प्रमुखलेखक खो दिया है जिसने समकालीन सामाजिक जीवन की गहरी संवेदनशीलता और ईंसानी दृष्टिकोण को कलम बन्द किया है। उन्होंने अपने उपन्यासों और कहानियों में गूढ़ और जटिल विषयों को उठाया और उन्हें प्रेरणा उत्प्रेरक विचारों के साथ प्रस्तुत किया।

रामस्वरूप चतुर्वेदी

हिन्दी काव्य संवेदना मर्मज्ञ डॉ० रामस्वरूप चतुर्वेदी ने 17 जुलाई 2003 को मध्याह्न डेढ़ बजे इलाहाबाद के नाजरेथ अस्पताल में निधन हो गया। चतुर्वेदीजी अपनी मौलिक आलोचना दृष्टि से आलोचना की वामपंथी विचारधारा को लगातार चुनौती देते रहे।

72 वर्षीय डॉ० चतुर्वेदी ने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से 1952 में एम०ए० तथा 1958 में डी० फिल० और 1972 में डी०लिट्० की उपाधि प्राप्त की। 1954 से 1991 तक इलाहाबाद विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग में अध्यापक तथा विभागाध्यक्ष रहे।

डॉ० चतुर्वेदी मुख्यत: काव्यभाषा की सर्जनात्मकता को केन्द्र में रखकर समीक्षा-कर्म में प्रवृत्त हुए। उन्होंने दो खण्डों में प्रकाशित 'हिन्दी साहित्य कोश' का सम्पादन किया। उनकी प्रमुख समीक्षा-कृतियाँ हैं—

हिन्दी नव लेखन (1960), भाषा और संवेदना (1964), अज्ञेय और आधुनिक रचना की समस्या (1968), मध्यकालीन हिन्दी काव्यभाषा (1974), सजन और भाषिक संरचना (1980), इतिहास और आलोचक दृष्टि (1982), हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास (1986 ई०), कविता का पक्ष (1994 ई०), हिन्दी गद्य विन्यास और विकास (1996 ई०), आचार्य रामचन्द्र शुक्ल : आलोचना का अर्थ और अर्थ की आलोचना (2001)।

चतुर्वेदीजी के अनुसार संस्कृति और कविता का गहरा अन्तस्सम्बन्ध है। कवि का दायित्व है कि वह संस्कृति की रक्षा करे, इसी प्रकार संस्कृति का धर्म है कि वह कविता को विचारधारा, राजनीति, संचार-साधन और यांत्रिकता के खतरे से बचाए।

चतुर्वेदीजी को साहित्य के सर्वोच्च सम्मान साधना तथा व्यास सम्मान प्राप्त हुए।

चतुर्वेदीजी के निधन से एक समर्थ साहित्य चिन्तक तथा समीक्षक की अपूर्णीय क्षति हुई है। विनम्र श्रद्धांजलि।

ईश्वरदेव मिश्र

वाराणसी के कर्मठ और अनुभवसिद्ध पत्रकार तथा नये और पुराने पत्रकारों के सेतु ईश्वरदेव मिश्र का सहसा दिल का दौरा पड़ने पर देहान्त हो गया। वे 67 वर्ष के थे। दैनिक 'जनमोर्चा' के सम्पादक के रूप में उन्होंने वर्षों उसका सम्पादन ही नहीं, उसकी आर्थिक स्थिति को मजबूत बनाने का सतत प्रयास किया था। उन्होंने दैनिक 'भारत' (वाराणसी-संस्करण) से पत्रकारी जीवन का प्रारम्भ कर मृत्युपर्यन्त पत्रकारिता से जुड़े रहे। मृत्यु से कुछ ही घंटे पहले वे विश्व पत्रकारिता पर लिखित अपनी पुस्तक के मुद्रण की तैयारी कर रहे थे। उत्तर प्रदेश सरकार की उस मान्यता समिति के सदस्य रहे हैं जो पत्रकारों को मान्यता प्रदान करती रही है। उन्होंने प्रदेश के पूर्वी जिलों के संवाददाताओं का जबरदस्त संघटन बना रखा था और संवाददाताओं के प्रशिक्षण की व्यवस्था भी करते थे। बलिया जनपद के बांसडीह में एक जुलाई 1936 ई० में जन्मे ईश्वरदेवजी की स्वाभाविक अभिरुचि पत्रकारिता से बँध गयी। आगरा विश्वविद्यालय से स्नातक तथा हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग से पत्रकारिता में प्रशिक्षित होकर 17 साल की उम्र में वे लेखन से रोटी के सहारे जिन्दगी चलाते रहे। बाद में विभिन्न विश्वविद्यालयों में पत्रकारिता विषय पर व्याख्यान देने के लिए आमंत्रित होते रहे। उनके आकस्मिक निधन से वाराणसी के वरिष्ठ पत्रकारों की एक मजबूत कड़ी टूट गयी।

ब्रिटिश कौंसिल, नई दिल्ली के क्वीन्स हाल में 7 जुलाई से 10 जुलाई तक वर्षोंपरान्त शेष पुस्तकों की बिक्री गई। पुस्तकें अल्प मूल्य में खरीदने वालों की भीड़ लगी थी। क्या हमारे देश की सरकार जो हिन्दी को विश्व भाषा के रूप में प्रतिष्ठित करना चाहती है विश्व के प्रवासी भारतीयों के लिए भारतीय साहित्य प्रतिष्ठान स्थापित कर उनको भारतीय साहित्य सुलभ करायेगा ? काश हम राजनीति से ऊपर उठकर देश के साहित्य के माध्यम से विश्व में सौहार्द स्थापित करें और विश्व में भारत के करोड़ों प्रवासी भाइयों को अपने देश की संवेदना से जोड़ें।

लिविंग हिस्ट्री

हिलेरी रॉटम क्लिंटन पत्नी बिल क्लिंटन ने अपने पति और मोनिका लेविंस्की के रोमांटिक जीवन पर 'लिविंग हिस्ट्री' पुस्तक लिख डाली, जो अमेरिका में हाथों हाथ बिक रही है इससे हिलेरी क्लिंटन को 80 लाख डालर मिल रहे हैं।

बिल क्लिंटन के परस्त्रीगमन के रोमांटिक किस्से जानने की ललक अमेरिका जनता में चरम पर है।

अमेरिका की यही लिविंग हिस्ट्री है जो विश्व चरित्र को प्रभावित कर रही है।

क्या हैं कलाम

राष्ट्रपति ए०पी०जे० कलाम के पूर्व सहयोगी श्री आर० रामनाथन की श्री कलाम पर लिखी गई पुस्तक 'हू इज कलाम' ने असीम लोकप्रियता प्राप्त की है। पुस्तक 6 भाषाओं में प्रकाशित हुई है। अंग्रेजी पुस्तक के प्रकाशक श्री के०पी०आर० नायर (कोणार्क प्रकाशन) के अनुसार पुस्तक 8 भाषाओं में और प्रकाशित की जायगी। हिन्दी में पुस्तक 'क्या हैं कलाम' नाम से प्रभात प्रकाशन, दिल्ली ने प्रकाशित की है, जो इस समय अत्यन्त लोकप्रिय हो रही है।

प्रधानमंत्री श्री अटलबिहारी वाजपेयी ने पुस्तकों का लोकार्पण करते हुए कहा—मैंने अपने जीवन में अनेक पुस्तकों का लोकार्पण किया है, किन्तु 6 भाषाओं में एक साथ प्रकाशित पुस्तक का लोकार्पण पहली बार कर रहा हूँ।

प्रसिद्ध तमिल ग्रन्थ हिन्दी में

पूर्व मुख्य निर्वाचन आयुक्त श्री जी०वी०जी० कृष्णमूर्ति ने नई दिल्ली में शैव भक्त संतों की तमिल रचनाओं के हिन्दी अनुवादों का लोकार्पण किया। सभी पुस्तकों में मूल तमिल का नागरी में लिप्यान्तर तथा काव्यात्मक हिन्दी अनुवाद किया गया है। पुस्तकों का प्रकाशन दिल्ली-तमिल संगम तथा तमिल हिन्दी संगम जो दोनों भाषाओं में सद्भाव स्थापित करने के लिए सेतु का कार्य कर रही हैं, ने प्रकाशित किया है। ग्रन्थों का अनुवाद श्री आर०के० सेठ ने किया है। श्री सेठ दिल्ली विश्वविद्यालय के जी०डी०ए०वी० कालेज में हिन्दी के प्राचार्य हैं।

सप्रे संग्रहालय

बौद्धिक विरासत के संरक्षण के बीस वर्ष

अपने ढंग के अनूठे शोध संस्थान—माधवराव सप्रे स्मृति समाचार पत्र संग्रहालय, भोपाल का द्वि-दशक समारोह 19 जून, 2003 को सम्पन्न हुआ। साक्षी रहे विद्वतजन को प्रख्यात इतिहासविद्, पुरातत्ववेत्ता एवं नृशास्त्री रायबहादुर डॉ० हीरालाल के कृतित्व को प्रणाम स्वरूप सप्रे संग्रहालय में स्थापित 'डॉ० हीरालाल कक्ष' का उद्घाटन हुआ। हिन्दी में गजेटियर लेखन का सूत्रपात जार्ज ग्रियर्सन के आग्रह पर मध्य प्रान्त की आदिम बोलियों की ग्रामोफोन रिकार्डिंग मध्यप्रान्त के इतिहास और पुरातत्व पर असाधारण अनुसंधान कार्य, 1914 में 'इन्स्क्रिप्शन्स' नाम से प्रकाशित हुआ। वृहद सन्दर्भ ग्रन्थ 'दि ट्राइब्स एण्ड कास्ट्स ऑफ दि सेण्ट्रल प्राविन्सेज ऑफ इण्डिया' सारी दुनिया में अपने विषय की प्रामाणिक पुस्तक के रूप में समादृत है।

मुख्य अतिथि जनसम्पर्क मंत्री श्री मानवेन्द्र सिंह, अध्यक्ष सांसद श्री सुरेश पचौरी तथा विशेष अतिथि म०प्र० विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष श्री बाबूलाल गौर एवं छत्तीसगढ़ के शिक्षा मंत्री सत्यनारायण शर्मा ने वरिष्ठ पत्रकार श्री यशवन्त अरगरे को 'लाल बलदेवसिंह सम्मान' एवं प्रो० हनुमान वर्मा को 'गणेशशंकर विद्यार्थी सम्मान' से सम्मानित किया। श्री रमेश शर्मा को 'माखनलाल चतुर्वेदी पुरस्कार', श्रीमती मेहरुन्निसा परवेज (समरलोक) को 'रामेश्वर गुरु पुरस्कार', श्री राजेश बादल को 'झाबरमल्ल शर्मा पुरस्कार' तथा श्री सिद्धार्थ खरे को 'जगदीशप्रसाद चतुर्वेदी पुरस्कार' प्रदान किए गए।

सप्रे संग्रहालय की जनसंचार माध्यमों पर केन्द्रित शोध पत्रिका 'आंचलिक पत्रकार' के 'हिन्दी की महिला सम्पादक एवं पत्रिकाएँ' विषय पर केन्द्रित विशेषांक का विमोचन जनसम्पर्क मंत्री ने किया।

संग्रहालय के संस्थापक-निदेशक श्री विजयदत्त श्रीधर ने संग्रहालय की स्थापना और पिछले बीस वर्षों की प्रगति की जानकारी दी। श्री श्रीधर के अनुसार मात्र 73 पत्र-पत्रिकाओं से स्थापित संग्रहालय में वर्तमान में 25 लाख पृष्ठ सामग्री है। कुल 30 हजार किताबें है। कुल 12 हजार शीर्षक पत्र-पत्रिकाएँ हैं, जिनमें से अनेक शीर्षक मात्र संग्रहालय में ही प्राप्य हैं। उन्होंने सामग्री की माइक्रोफिल्मिंग और लेमिनेशन की जानकारी देते हुए बताया कि सन् 1925 तक की सामग्री के सी०डी० रोम तैयार करवाने की योजना बनायी गयी है।

सूचना क्रान्ति तथा समाचार माध्यमों की साख

समारोह के दूसरे चरण में विद्यावाचस्पति डॉ० श्रीरंजन सूरिदेव (पटना) की अध्यक्षता में 'सूचना क्रान्ति और समाचार माध्यमों की साख' विषय पर बोलते हुए वक्ताओं ने कहा तमाम चुनौतियों और कड़ी प्रतिस्पर्धा के बीच वही समाचार माध्यम बच पाएगा जिसकी विश्वसनीयता संदेह से परे होगी। इस प्रसंग में 'कर्मवीर' के यशस्वी सम्पादक पं० माखनलाल चतुर्वेदी का भरतपुर सम्पादक सम्मेलन (1927) के अध्यक्ष पद से दिया गया वह ऐतिहासिक भाषण भी उद्धृत किया गया जिसमें उन्होंने कहा था ''यदि समाचार पत्र संसार की एक बड़ी ताकत है, तो, इसके सिर जोखिम भी कम नहीं। पर्वत की जो शिखरें हिम से चमकती और राष्ट्रीय रक्षा की महान दीवार बनती हैं, उन्हें ऊँची होना पड़ता है। जगत में समाचार पत्र यदि बड़प्पन पाये हुए हैं तो जिनकी जिम्मेवारी भी भारी है। बिना जिम्मेवारी के बड़प्पन का मूल्य ही क्या है ? और वह बड़प्पन तो मिट्टी के मोल हो जाता है जो अपनी जिम्मेवारी को नहीं सम्हाल सकता। समाचार पत्र तो अपनी गैर जिम्मेवारी से स्वयं ही मिट्टी के मोल का नहीं हो जाता, वरन् वह देश के अनेक महान अनर्थों का उत्पादक और पोषक भी हो जाता है।''

डॉ० रामचन्द्र तिवारी 80 वर्ष के हुए

हिन्दी गद्य के विशिष्ट अध्येता तथा संत साहित्य के मर्मज्ञ डॉ० रामचन्द्र तिवारी ने अस्सी वर्ष की आयु पूर्ण कर जीवन के 81वें वर्ष में प्रवेश किया है। चार जून 1924 ई० को वाराणसी के कुकुढ़ा ग्राम में जन्मे आचार्य तिवारी की उच्च शिक्षा लखनऊ विश्वविद्यालय में सम्पन्न हुई। हिन्दी-विभाग, गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर के अध्यक्ष पद से 1984 में अवकाश प्राप्त करने के बाद आप निरन्तर साहित्य साधना में लगे हुए हैं, जिनमें हिन्दी का गद्य साहित्य, कबीर मीमांसा, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, हिन्दी आलोचना : शिखरों का साक्षात्कार आदि महत्त्वपूर्ण हैं। वर्तमान समय में साहित्य अकादमी के भारतीय साहित्य के निर्माता सीरीज के अन्तर्गत आचार्य रामचन्द्र शुक्ल पुस्तक लिखने में व्यस्त हैं। 'हिन्दी का गद्य साहित्य' का चतुर्थ संशोधित एवं परिवर्धित संस्करण गद्य साहित्य की अद्यतन जानकारी के साथ शीघ्र प्रकाशित हो रहा है। भविष्य में भी आपसे अनेक महत्त्वपूर्ण कृतियों की अपेक्षा है।

कथन

- विश्व हिन्दी सम्मेलनों के आयोजन के लिए विश्व स्तर की एक कार्य समिति की स्थापना की जाए।
- मारीशस में एक स्थायी सचिवालय बनाने का निश्चय, जो पिछले सम्मेलनों में किया गया था, उसे उसकी पूर्णता तक लाया जाए।
- वर्धा के महात्मा गाँधी हिन्दी विश्वविद्यालय को उसकी निष्क्रिय भूमिका से निकाल कर जीवन्त रूप दिया जाय।
- एक ऐसी पत्रिका प्रकाशित की जाए जिसके माध्यम से संसार के उन सभी देशों में हिन्दी के अध्ययन व साहित्य सृजन की दिशा में जो कार्य हो रहा है, उसकी पूर्ण जानकारी प्राप्त हो सके।
- विश्व हिन्दी सम्मेलनों को आयोजित करने के लिए विदेश मंत्रालय में एक अलग 'सेल' की स्थापना की जाए।

—महीप सिंह

पुरस्कार-सम्मान

गुजराती कवि राजेन्द्र शाह को ज्ञानपीठ पुरस्कार

प्रख्यात गुजराती कवि **राजेन्द्र केशवलाल शाह** को वर्ष 2001 के लिए प्रतिष्ठित ज्ञानपीठ पुरस्कार देने की घोषणा की गई है। ज्ञानपीठ पुरस्कार में पाँच लाख रुपये नकद, प्रशस्तिपत्र और वाग्देवी की कांस्य प्रतिमा दी जाती है। स्वतंत्र भारत में गुजराती कविता को नई दिशा देने वाले शाह का 37वें ज्ञानपीठ पुरस्कार के लिए चयन श्री लक्ष्मीमल सिंघवी की अध्यक्षता वाले निर्णायक-मण्डल ने किया।

नब्बे वर्षीय शाह गुजरात से सम्बन्ध रखने वाले तीसरे व्यक्ति हैं जिन्हें ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया जा रहा है। इससे पहले 1967 में उमाशंकर जोशी और 1985 में पन्नालाल पटेल को यह गौरव हासिल हो चुका है। शाह को इससे पहले साहित्य अकादमी पुरस्कार, भारतीय भाषा परिषद पुरस्कार और गुजरात सरकार के नरसिंह मेहता पुरस्कार से सम्मानित किया जा चुका है।

विद्यानिवास मिश्र को शिखर पुरस्कार

श्रुतिकीर्ति स्मृति संस्थान, बरहज (देवरिया) ने विगत 18 जून 2003 को **पं० विद्यानिवास मिश्र** को शिखर सम्मान के रूप में गणेश की प्रतिमा, शाल, नारियल एवं 51 हजार रुपये प्रदान किये। सम्मानित आचार्य मिश्र ने कहा—आज साहित्यकार की रचना बिना पढ़े, केवल नाम के आधार पर सम्मान देने की प्रवृत्ति चल रही है।

सैय्यद आफताब हसनैन को मोहनराकेश सम्मान

साहित्य कला परिषद, दिल्ली ने **सैय्यद आफताब हसनैन** के नाटक 'रोशनी' को मोहन राकेश नाट्य लेखन प्रतियोगिता के अन्तर्गत विशेष पुरस्कार (क्षेत्रीय) के लिए चुना है।

आफताब हसनैन ने अनेक एकांकी तथा पूर्ण-कालिक नाटक लिखे हैं जिनमें उल्लेखनीय हैं—'इस आग को बुझा दो', 'दमन', 'वह सुबह', 'कभी तो आयेगी'। कहानी संग्रह 'यहाँ अमीन बिकती है', 'कहानी नगर' आदि। श्री हसनैन को महाराष्ट्र, बिहार, उत्तर प्रदेश के राज्य सरकारों से अनेक पुरस्कार प्राप्त हो चुके हैं। 'आहट', 'जांबाज', 'हास्टल' आदि टी०वी० सीरियल की कड़ियाँ भी लिखी हैं। 'दशहत' के लिए आपको 'सलाम बाम्बे' अवार्ड प्राप्त हुआ था।

पुश्किन सम्मान

हिन्दी के प्रसिद्ध कवि, आलोचक और साहित्यिक पत्रिका दस्तावेज के सम्पादक **डॉ० विश्वनाथप्रसाद तिवारी** पन्द्रह दिन की यात्रा कर स्वदेश लौट आए हैं।

यह सम्मान प्रतिवर्ष हिन्दी के किसी एक लेखक को दिया जाता है। रूसी कवि अलेक्सान्द्र सेंकेविच की अध्यक्षता में पाँच निर्णायकों की समिति ने डॉ० विश्वनाथप्रसाद तिवारी को पुश्किन सम्मान से सम्मानित करने का निर्णय किया था।

इस सम्मान के अन्तर्गत डॉ० तिवारी को पन्द्रह दिन की यात्रा पर रूस बुलाया गया था। उन्होंने रूस के विभिन्न नगरों का भ्रमण किया तथा वहाँ के लेखकों, कवियों व बुद्धिजीवियों से मुलाकात की। उन्हें मास्को विश्वविद्यालय ने भी व्याख्यान के लिए आमंत्रित किया। वहाँ उन्होंने समकालीन हिन्दी कविता पर भाषण दिया।

प्रसाद की काशी

जिनकी अब कान कहानी सुन्यो करें

सम्भवत: सन् 84-85 का वाक्या रहा होगा—कवि श्री नरेश मेहता ने मेरे यहाँ भोजन करते समय कवि-परम्परा पर अपनी टिप्पणी करते हुए कहा था कि—''हिन्दी कविता का मध्याह्नकाल तो छायावाद ही था—''प्रसाद, महादेवी, निराला और पंत ये चारों मध्याह्नकालीन सूर्य की तरह थे—हम सभी तो हिन्दी-कविता की सायंकालीन लालिमा के कवि हैं।'' अक्षरश: मुझे जस का तस याद है। श्री पुरुषोत्तम मोदी सम्पादित 'अंतरंग संस्मरणों में जयशंकर प्रसाद'। पढ़ते वक्त श्री मेहताजी का कथन बारम्बार दिमाग में कौंधता रहा। इस पुस्तक के माध्यम से महाकवि का जो व्यक्तित्व या अंतरंग स्वरूप उभर कर सामने आया है उसे महादेवीजी की निम्नरूपकीय पंक्तियाँ ही बाँच पाती हैं—''हिमालय के ढाल पर उसकी गर्वीली चोटियों से समता करता हुआ एक सीधा ऊँचा देवदारू का वृक्ष था। उसका उन्मत मस्तक हिम-सातप-वर्षा से प्रहार झेलता था।'' यहीं अंतर्बाह्य स्थिति परक दारुण-निदारुण कमोबेश स्थिति कवि-सम्राट 'प्रसाद' की भी रही है। काशी का खाँटा बनारसी रंग, दिव्य-भव्य प्रोन्नत महिमा, सौ-सौ ज्योतिश्चूसों को मथने वाला शक्तिपुंज, पुरुष सौंदर्य, आगाध ज्ञान, अकृत्रिम सहृदयता, उच्च चरित्र, स्मृतियों में से नए अभिनव रूप में उमकती हुई ऐतिहासिक समसामयिकी अवधारणा, दानवीरता, दानशीलता, और भी जाने कितना कुछ था जिसे गिनवाते समय मानवता की हस्तेन्द्रियाँ शिथिल पड़ सकती हैं। 'प्रसाद' के पर्याय में भवभूति रचित 'उत्तररामचरितम्' के राम याद आ जाते हैं—धीरोदात्त-धीरप्रश्रयी—मर्यादायुक्त पीड़ा महोदधि अथवा उनके ही आराध्य महाकाल कूटगर व कंठधारी शिव की तरह।

प्रस्तुत पुस्तक में यूँ तो सभी महानुभावों के संस्मरणों का वैभिन्य इंद्रधनुषीय छटा बिखेरे हुए हैं, परन्तु उनके निहायत निजी के 'उरुझाव' को 'सुरझाती' विश्लेषणीय संयोजन डॉ० राजेन्द्रनारायण शर्मा, विनोद शंकर व्यास, मैत्रेयी सिंह आदि के लेखों में पूरी सशक्तता के साथ उभरकर सामने आई हैं उनकी विनोदप्रियता, उनकी व्यंग्य करने की आदत, उनका थोड़ा-सा चुल-बुलापन उनके संकोच के आवरण से बाहर थोड़ा-सा कभी-कभार झाँक लेता निस्संकोच—इन लेखों में एक अपना ही सहज-साधारण बनारसी रंग में पगे व्यक्ति के दर्शन होते हैं। अंतरंग संस्मरणों के चलते माखनलाल चतुर्वेदी, नंददुलारे वाजपेयी, जैनेन्द्रकुमार, महादेवी आदि ने उनके साहित्यिक अवदान के सूत्र द्वारा ही उनके व्यक्तित्व के गणित को हल करने की चेष्टा की है।

बिलाशक़ 'प्रसाद' जी के कतिपय अछूते-अनूठे विविधवर्णी नक्श के सामने आए हैं—परन्तु मुझे लगता है कि खूबियों से खामियाँ भी अनन्यता से जुड़ी होती हैं। परन्तु हमारे यहाँ की भारतीय व्यक्तिनिष्ठ मानसिकता भव्य को दिव्य तो बना देती है—परन्तु उसकी सहज प्राकृतिक स्वभावगत त्रुटियों को खोलने मे हिचकिचाती झिझकती है। इसलिए प्रस्तुत पुस्तक 'प्रसाद' को भव्यता से दिव्यता की ओर तो अवश्य ले जाती है—परन्तु मानव 'प्रसाद' अभी भी दृष्टि ओट ही रह जाते हैं। कतिपय संस्मरणों में ख़ूबियों को गिनवाते-गिनवाते 'गोत्र-स्खलन' हुआ है—परन्तु विराट पर खरोंच न आ जाए—तुरन्त सम्हल गये हैं। इससे उनका व्यक्तिगत भी एक अछोर अंतरिक्ष की तरह पाठकों के सामने। कुहराया हुआ-सा सामने आया है।

उपरान्त इस सबके एक अबूझ-गूढ़ किंवदंती का काफी कुछ खुला है। इतनी गहरी सम्प्रेषणीयता है कि पाठक काव्य और काव्यकार के युग में अपने आपको पाता है।

मुझे लगता है कि यह पुस्तक 'प्रसाद' की प्रमाणिक जीवन का भविष्य तय करने में पाथेय की तरह सिद्ध होगी। यदि ऐसा होता है तो आवारा मसीहा, की तरह एक और विराट-व्यक्तित्व की आद्यन्त जीवनी आने की सम्भावना बनेगी। **— दिनेश द्विवेदी**

अंतरंग संस्मरणों में 'जयशंकरप्रसाद'
पुरुषोत्तमदास मोदी
$9'' \times 5\frac{3}{4}$ पृष्ठ: 180 मूल्य: 120.00
ISBN : 81-7124-305-3

पुस्तकें प्राप्त

यहाँ अमीना बिकती है (नाटक)
आफताब हुसैन 60.00
कहानी नगर (बाल कहानियाँ) '' 75.00
जीवन प्रभात प्रकाशन
मुम्बई-400 063

सोजे-निहाँ (गज़ल संग्रह)
उषा यादव 'उषा' 50.00
अमराइयाँ (गज़ल संग्रह) '' 40.00
बी० 536, गुरुतेगबहादुर नगर
इलाहाबाद

पुस्तक समीक्षा

THE RISE AND GROWTH OF HINDI JOURNALISM

(1826-1945)

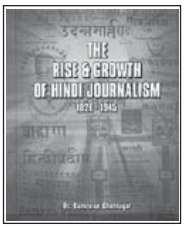

by
Dr. Ram Ratan Bhatnagar
Late Professor of Hindi
Sagar University

Edited by
Dr. Dhirendra Nath Singh
Senior Editor, Hindi Daily 'Aj'

Double Crown octavo $7\frac{1}{2}$ x 10", 562 Pages

PRICE : Rs. 800

ISBN : 81-7124-327-4

हिन्दी पत्रकारिता का आरम्भ हिन्दी-भाषी क्षेत्र से बाहर बंगाल के कलकत्ता शहर में हुआ था। इसका कारण यह है कि 'पत्रकारिता' आधुनिक सांस्कृतिक नव-जागरण की देन है। इस जागरण का श्रीगणेश बंगाल से हुआ था। राजा राममोहनराय को एशिया का पहला आधुनिक महापुरुष माना जाता है। श्री राय अंग्रेजी शिक्षा के समर्थक और प्राचीन रूढ़ियों के विरोधी थे। उन्होंने अपने विचारों को शिक्षित जनता में प्रचारित-प्रसारित करने के लिए 1821 ई० में 'सम्वाद कौमुदी' नामक बंगला साप्ताहिक का प्रकाशन आरम्भ किया। बंगला भाषा में पत्रकारिता के आरम्भ होने पर कलकत्ता में बसे हिन्दी-भाषियों का ध्यान भी इस ओर गया और हिन्दी का पहला पत्र 'उदन्त मार्तण्ड' 1826 ई० में प्रकाशित हुआ। इसके जन्मदाता युगुल किशोर सुकुल थे जो कानपुर से जाकर कलकत्ता में बस गये थे। उदन्त मार्तण्ड के बाद तो 'बंगदूत'; 'भारत मित्र'; 'सार सुधानिधि'; 'उचितवक्ता' आदि अनेक पत्र प्रकाशित हुए। इन पत्रों ने जनता को नवजागरण का सन्देश दिया। भारतीय नवजागरण के बढ़ते चरण और बदलते आयाम के साथ हिन्दी-पत्रकारिता के आयाम भी बदलते रहे और सामाजिक, सांस्कृतिक जागरण से आरम्भ होकर राष्ट्रीय स्वतन्त्रता-संग्राम तक का, सामाजिक चेतना का पूरा इतिहास, हिन्दी पत्रकारिता में प्रतिबिम्बित हुआ। हिन्दी भाषा और हिन्दी साहित्य के विकास भी मुख्यत: हिन्दी पत्रकारिता के माध्यम से ही हुआ है। 1868 ई० में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र द्वारा प्रकाशित 'कविवचन सुधा' से हिन्दी-साहित्य का विकास को नयी दिशा और गति प्राप्त हुई। आचार्य शुक्ल ने 'भारतेन्दु' के समय में प्रकाशित होने वाले 27 पत्रों की सूचना अपने इतिहास में दी है। इससे आधुनिक हिन्दी साहित्य के विकास में पत्र-पत्रिकाओं की भूमिका का अनुमान लगाया जा सकता है। ऐसी स्थिति में आधुनिक हिन्दी साहित्य के विकास की प्रामाणिक जानकारी के लिए हिन्दी पत्रकारिता के उद्‌भव और विकास का गम्भीर अध्ययन नितान्त आवश्यक है।

यों तो हिन्दी पत्रकारिता के विकास को रेखांकित करने के लिए छिटपुट प्रयास पहले भी होते रहे किन्तु सन् 1826 से लेकर 1945 ई० तक के हिन्दी पत्रकारिता के क्रमबद्ध और विस्तृत इतिहास लेखन का श्रेय डॉ० रामरतन भटनागर को प्राप्त है। डॉ० भटनागर ने यह इतिहास इलाहाबाद विश्वविद्यालय से डी०फिल्० उपाधि प्राप्त करने के लिए शोध-प्रबन्ध के रूप में प्रस्तुत किया था। सन् 1947 ई० में 'दी राइज एण्ड ग्रोथ ऑफ हिन्दी जरनिलज्म' नाम से इसका प्रकाशन 'किताब महल' इलाहाबाद से हुआ था। इसके सम्बन्ध में टिप्पणी करते हुए अपने 'समाचार-पत्रों का इतिहास' (संवत् 2010) में श्री अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी ने लिखा है—''भटनागरजी अपनी कृति से डॉक्टर तो बन गए पर उनसे जिस शोध और परिश्रम की अपेक्षा की जाती थी उसका परिचय उनके ग्रन्थ से नहीं मिलता।'' वाजपेयीजी की यह टिप्पणी सही हो सकती है लेकिन यह ध्यान देने की बात है कि बंगाल से लेकर पंजाब तक के विस्तृत क्षेत्र में बिखरी हुई पत्र-पत्रिकाओं का क्रमबद्ध और प्रामाणिक इतिहास-लेखन किसी एक व्यक्ति के बूते का काम नहीं है। डॉ० भटनागर का यह पहला प्रयास था। इसलिए इसमें छोटी-मोटी त्रुटियों और कमियों का रह जाना स्वाभाविक था।

डॉ० भटनागर ने अपने सामने मुख्यत: चार लक्ष्य रखकर अध्ययन आरम्भ किया था—

(क) हिन्दी-पत्रकारिता के क्रमबद्ध इतिहास का अध्ययन।

(ख) पत्रकारिता-कला के विकास का अध्ययन।

(ग) हिन्दी भाषा और साहित्य के विकास में पत्रकारिता का योगदान का अध्ययन।

(घ) पत्र-पत्रिकाओं में अभिव्यक्त समकालीन सामाजिक स्थितियों और समस्याओं का अध्ययन।

कहना न होगा कि अपने इस प्रयास में उन्हें बहुत दूर तक सफलता प्राप्त हुई है। प्रकाशित होने पर पाठकों ने इसका स्वागत किया था। इधर बहुत दिनों से यह कृति उपलब्ध नहीं थी। इस पत्रकारिता के क्षेत्र में बहुत-कुछ बदल चुका है। अनेक विश्वविद्यालयों में यह एक स्वतन्त्र विषय के रूप में पढ़ाया जा रहा है। ऐसी स्थिति में इस कृति की आवश्यकता का अनुभव शिद्दत से किया जा रहा था। यह प्रसन्नता का विषय है कि डॉ० धीरेन्द्रनाथ सिंह द्वारा सम्पादित होकर अब यह कृति पुन: प्रकाशित हो गयी है। डॉ० धीरेन्द्रनाथ सिंह एक गम्भीर अध्येता और समर्पित सम्पादक हैं। उन्होंने डॉ० भटनागर की मूल कृति में लक्षित होनेवाली तथ्यात्मक त्रुटियों को दूर कर दिया है। 'बनारस अखबार' के सम्बन्ध में अभी तक यही समझा जाता था कि उसके प्रकाशक राजा शिवप्रसाद सितारे हिन्द थे। डॉ० सिंह ने तथ्यों के आधार पर सिद्ध कर दिया है कि इसके सम्पादक रघुनाथ गोविन्द थत्ते थे और यह बनारस के दूधविनायक मुहल्ले से प्रकाशित होता था। इसी प्रकार कलकत्ता से प्रकाशित होने वाले—'सारसुधानिधि'; 'भारत-मित्र'; 'उचितवक्ता' आदि पत्रों की प्रकाशन तिथियों से सम्बद्ध मूलों को भी डॉ० धीरेन्द्रनाथ सिंह ने सुधार दिया है। पाठकों की सुविधा के लिए डॉ० सिंह ने मूल प्रकाशित कृति के ढाँचे में कुछ और सुधार किये हैं। आरम्भ में डॉ० सिंह ने 'उदन्तमार्तण्ड'; 'कविवचन सुधा'; 'हरिश्चन्द्र मैगजीन'; 'श्रीहरिश्चन्द्रचन्द्रिका'; 'बालाबोधिनी'; 'समय विनोद'; 'हिन्दी प्रदीप'; 'मित्र विलास'; 'ब्राह्मण'; 'आनन्द कादम्बिनी'; 'श्री हरिश्चन्द्रकौमुदी'; 'सरस्वती'; 'भारत जीवन'; 'भारत मित्र'; 'क्षत्रिय पत्रिका'; 'नाट्यपत्र' आदि पत्रों के आवरण पृष्ठों के छायाचित्र भी प्रकाशित करा दिये हैं। डॉ० भटनागर की मूल प्रकाशित कृति (सन् 1947 ई०) में कहीं भी इनमें से किसी पत्र का कोई चित्र नहीं दिया गया था। कहना न होगा कि उपर्युक्त पत्रों के आवरण पृष्ठों का अवलोकन आज के पाठक को कितना सुखद प्रतीत होगा। वह इस तथ्य से भी अवगत होगा कि तत्कालीन मुद्रण-कला कहाँ-से-कहाँ पहुँच गयी है। सब मिलाकर देखा जाय तो अपने नवीन कलेवर में डॉ० भटनागर की यह कृति अधिक आकर्षक, परिष्कृत और उपयोगी हो गयी है। इसका वर्तमान आकार-प्रकार अत्यन्त भव्य और अकादमिक हो गया है। वाराणसी के प्रख्यात प्रकाशन संस्थान के संचालक श्री पुरुषोत्तमदास मोदी स्वयं एक सुरुचि सम्पन्न सम्पादक और संवेदनशील लेखक हैं। निश्चय ही हिन्दी पत्रकारिता के उद्‌भव और विकास का ऐतिहासिक दृष्टि से आकलन करनेवाली यह कृति पुनर्नवता प्राप्त करके संग्रहणीय हो गयी है। इसके लिए सम्पादक डॉ० धीरेन्द्रनाथ सिंह और प्रकाशक श्री पुरुषोत्तमदास मोदी दोनों ही साधुवाद के पात्र हैं। हिन्दी-जगत इस कृति को पूरे मन से अपनायेगा, ऐसा हमारा विश्वास है।

—डॉ० रामचन्द्र तिवारी

भारतीय समाज एवं संस्कृति

परिवर्तन की चुनौती

सम्पादक
सत्यप्रकाश मित्तल

प्राक्कथन
युनेस्को प्रोफेसर डॉ० वैद्यनाथ सरस्वती

आचार्य नरेन्द्रदेव की जन्मशती के अवसर पर आचार्य नरेन्द्रदेव समाजवादी संस्थान ने एक बड़ा सेमिनार किया। इस सेमिनार का विषय था 'भारतीय संस्कृति और परिवर्तन की चुनौती'। इसमें अनेक अधिकारी विद्वानों ने भाग लिया। गोष्ठी का स्थान काशी हिन्दू विश्वविद्यालय था। यह ग्रन्थ उसी सेमिनार में पठित लेखों, भाषणों का संग्रह है। इन निबन्धों को देखने से स्पष्ट है, इस सेमिनार के भागवारकों में जितना बड़ा ज्ञान है, उतना ही परिवर्तन के बीच सामंजस्य की चिन्ता। इसी से सभी ने संस्कृति, समाज और परिवर्तन को अपने-अपने ढंग

से समझने-समझाने का प्रयास किया। ये सभी भारत के शीर्षस्थ विद्वान हैं। अत: इनकी सोच में गम्भीरता है। अधिकांश विद्वान पश्चिमी समाज चिन्तन और भारत परम्परा के ज्ञाता हैं। आचार्यजी का सन्दर्भ अधिकतर लेखों में है। अन्त में आचार्यजी के पाँच लेख भी संगृहीत हैं।

इस संग्रह का सम्पादन श्री सत्यप्रकाश मित्तल ने किया है। श्री मित्तल समाजशास्त्र के विद्वान् एवं पुराने समाजवादी हैं। उन्होंने अनेक महत्त्वपूर्ण पत्रों का सम्पादन किया है। प्राक्कथन लेखक युनेस्को प्रोफेसर श्री वैद्यनाथ सरस्वती हैं। इस प्रकार इस ग्रन्थ का आरम्भ ठोस आधार पर हुआ है।

'संस्कृति' का सवाल बड़ा टेढ़ा है। इसी से पचास के दशक में क्रौबर तथा वलक्होहन जैसे दो विख्यात मानवशास्त्रियों ने संस्कृति की 160 से भी अधिक परिभाषाओं का विश्लेषण करते हुए, इसके बुनियादी अर्थ को स्पष्ट करने का प्रयास किया था (पृष्ठ 37)। इतने प्रयत्न के बाद भी संस्कृति की परिभाषा नहीं हो सकी। इसी पुस्तक में सबने अलग-अलग सोचा है। सोचनेवालों में अधिकतर समाजवादी हैं। इनके अतिरिक्त कई बौद्ध, जैन, ईसाई, इस्लामी एवं स्वतंत्र चिन्तकों के लेख हैं। विश्वविद्यालयों और उनसे बाहर के लोग भी हैं। प्राय: सभी ने पश्चिमी और भारत दृष्टि का सामंजस्य बैठाने और संस्कृति को परिभाषित किया है। विरोध भी स्पष्ट है। कुछ की राय में संस्कृति धर्म की सखी, कभी-कभी उससे निकली और किसी दृष्टि में संस्कृति धर्म से नितान्त भिन्न है। सभी दृष्टियाँ आंशिक सत्य का संकेत करती है। इस ग्रन्थ में परिशिष्ट को लगाकर 42 लेखक हैं। अन्त में सभी लेखकों के संक्षिप्त परिचय की सूची है।

प्राय: सभी लेखकों ने परिवर्तन का एक रूप में स्वीकार किया है। केवल श्री गोकुलचन्द्र ने परिवर्तन पर जैन दृष्टि से विचार किया है। उनकी दृष्टि में जैन परम्परा परिवर्तन के यथार्थ की स्वीकृति से आरम्भ होती है। ...अस्तित्व के लिए परिवर्तन प्रथम सत्य है। विसर्जन अस्तित्व की समाप्ति का नहीं, नये सर्जन का जनक है (पृष्ठ 35)। परिवर्तन की इतनी उदार और स्पष्ट व्याख्या दुर्लभ है। डॉ० गोविन्दचन्द्र पाण्डेय संस्कृति को आत्मा से जोड़ते दीखते हैं—मनुष्य स्वरूपत: आत्मा है, सामाजिक भूमिकाओं का अभिमान उसके लिए एक गौण प्रतीति है (पृष्ठ 3)। सांस्कृतिक सर्जना सामाजिक भौतिक स्थिति पर साक्षात निर्भर नहीं करती है (पृष्ठ 2)। दो दृष्टियों का स्पष्ट संघर्ष के बीच संस्कृति का रूप निखरता है। वे दो दृष्टियाँ पुरानी और नवीनतम हैं। प्राचीन धारणा के अनुसार समाज व्यवस्थापक धर्म सनातन है और अपने मूल में मनुष्योत्तर। आधुनिक धारणा के अनुसार धर्म या व्यवस्था समाज के अन्दर परस्परोपकारिता और अन्तर्द्वन्द्व से उत्पन्न होती है (पृष्ठ 5)। यह सर्वथा मानवीकृत है। पशु प्रवृत्ति से और मनुष्य बौद्धिक विचारों से नियंत्रित है। पाण्डेयजी का चिन्तन अत्यन्त गम्भीर होकर भी सुस्पष्ट है।

प्रो० राजाराम शास्त्री ने अपने को आचार्यजी के विचारों तक सीमित रखा है। वे आचार्यजी के विचारों को समझाते हैं। यही काम रमेशचन्द्र तिवारी करते हैं। किन्तु तिवारीजी का फलक विस्तृत है। इनके चिन्तन में पश्चिमी समाजशास्त्र की अधुनातम उपलब्धियों के साथ आचार्य के विचार महत्व की स्थापना है। श्यामाचरण दुबे संस्कृति वृक्ष और नदी के माध्यम से समझाते हैं। समदोङ् रिनपोछे भी शुद्ध बौद्धवादी हैं। वे संस्कृति को चित्त का अभिसंस्कार मानते हैं। बौद्ध दृष्टि में शील, समाधि, प्रज्ञा जैसे करुणामूलक संस्कारों से परिकार का चित्त में संस्कृति का निर्माण होता है। दु:शील व्यक्ति का चित्त कभी समाहित नहीं हो सकता है। अत: उससे संस्कृति नहीं बन सकती है। राग, द्वेष, मोह भी संस्कृति निर्माण के बाधक तत्व हैं। बौद्ध दृष्टि से संस्कृति को समझने के लिए यह लेखक अत्यन्त महत्व का है। योगेन्द्र सिंह पश्चिमीकरण और आधुनिकीकरण में अन्तर मानते हैं।

पूरी पुस्तक का फलक विराट है। इस विराटता में पाठक का अपना मत स्वयं समझना होगा। विस्तार के पाठक की क्षमता विस्तृत होनी चाहिए क्योंकि ग्रन्थ निचोड़न न होकर विभिन्न आयामों वाला है। संस्कृति सम्बन्धी विश्वकोश है। आचार्य नरेन्द्रदेव प्राय: ही अपने को मार्क्सवादी कहते थे। यह युगधर्म के साथ टली विवशता भी थी। उस समय तक भारत में ब्रिटिश साम्राज्यवाद का एकमात्र विकराय मार्क्सवाद था। अत: सब कुछ को मार्क्सी चश्मे से देखने की प्रथा है। किन्तु आचार्य के पाँच लेख बताते हैं कि वे रूढ़िवादी मार्क्सवादी नहीं थे। अन्य मार्क्सवादी भी संस्कृति को मार्क्स से अलग कर सोचना पसन्द करते थे। भुवनेशचन्द्र मिश्र तो समाजवाद में संस्कृति के प्रवेश का आचार्यजी की महत्त्वपूर्ण देन मानते हैं। सांस्कृतिक दृष्टि से यह ग्रन्थ मार्क्स की अपेक्षा गाँधी के अधिक समीप है क्योंकि संस्कृति का आधार अहिंसा है। गाँधी के एकादश व्रत हैं।

अन्त में कहना यह है कि यह ग्रन्थ उस समय प्रकाश में आया है जब भारत सांस्कृतिक गिरावट के चरम पर है। इस ग्रन्थ को उच्च-शिक्षा के पाठ्यक्रम में लगाना चाहिए। न केवल समझदारी के लिए बल्कि सांस्कृतिक उत्थान की दृष्टि से भी। इसलिए भी कि इस जड़वादी दृष्टि की अपेक्षा भारत के आध्यात्मिक मनोभाव की प्रधानता है। यह भारत की ओर बढ़ने का प्रस्थान बिन्दु भी है। इसमें पश्चिम का तम नहीं, वहाँ का रज और भारत के सत्व का मेल है।

—डॉ० युगेश्वर

पृ० : 380 (डिमाई 8) मूल्य : 380.00

ISBN : 81-7124-347-9

एक विश्व : एक संस्कृति

राष्ट्रिय पंडित ब्रजवल्लभ द्विवेदी

पृष्ठ : 216 मूल्य : 150.00

ISBN : 81-7124-334-7

प्रस्तुत समीक्ष्य ग्रन्थ पाँच 'अधिकारों' में विभक्त है। अधिकारों का शीर्षक है (क्रमश:)—साधक-बाधक तत्त्व, धर्म और संस्कृति, दर्शन, आगम साहित्य और विश्व संस्कृति। ग्रन्थ में प्रारम्भिक विषयप्रवेश के रूप में 'प्रस्तावना' और ग्रन्थ के अन्त में स्वाभिमत के निष्कर्ष रूप 'उपसंहार' की योजना की गयी है।

हमारी आर्षमनीषा का शाश्वत सङ्कल्प है—'माता भूमि: पुत्रोऽहं पृथिव्या:।' इस वेदवाणी का उद्घोष ही है विश्वबन्धुत्व। यही स्वर आगे बढ़ते हुए—'वसुधैव कुटुम्बकम्' और 'विश्वमेकनीडम्' के रूप में अभिव्यक्त हुआ। इन सभी संकल्पों की मूलभावना एक ही है। भगवती उपनिषद् ने भी इसी उदात्त भाव का निर्देश दिया—

ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत्।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृध: कस्यास्विद्धनम्॥

इस प्रकार के भाव हमारे भारतीय वाङ्मय में सर्वत्र अनुस्यूत हैं और विश्वबन्धुत्व, सौहार्द तथा सह-अस्तित्व की उदात्त चेतना हमारे प्राणों में नित्य निवास करती है।

आधुनिक काल में 'ग्लोबलाइज़ेशन' अर्थात् 'भूमण्डलीकरण' का नारा बड़े जोर-शेर से उछाला जा रहा है। निश्चय ही यह बड़ा लुभावना है किन्तु इसके पीछे की मानसिकता बड़ी घिनौनी है। यह विकसित देशों का एक बाजारू नारा है जिसका आधार विशुद्ध रूप से आर्थिक स्वार्थ और उपभोक्तावादी षड्यन्त्र है। 'वसुधैव कुटुम्बकम्' से इस नारे की कहीं कोई तुलना नहीं है।

'एक विश्व एक संस्कृति'—विश्व के वर्तमान परिप्रेक्ष्य में एक अतिशय उत्प्रेरक, महत्त्वपूर्ण, अमूल्य सोद्देश्य विचार है जिसका गुम्फन भारतीय मनीषा के प्रतिनिधि, विख्यात तन्त्रागमवेत्ता, चिन्तक विद्वान् प्रो० ब्रजवल्लभ द्विवेदी ने अत्यन्त अध्यवसायपूर्वक किया है। अपने इस ग्रन्थरत्न के लिए उपयुक्त शीर्षक की खोज में भले ही उन्होंने मि० वेण्डेल विल्की का 'वन वर्ल्ड' देखा हो किन्तु उसमें वह विश्वरूपता नहीं है, जो द्विवेदीजी के प्रस्तुत कर्तृत्व में है। 'एक विश्व एक संस्कृति', वस्तुत: विशद आध्यात्मिक चिन्तन की पृष्ठभूमि पर विनिर्मित मानव मूल्यों और सांस्कृतिक संवेदनाओं की अद्वितीय विरासत है। आचार्य द्विवेदीजी ने भारतीय चिन्तन के आलोक में नाना धर्म-दर्शन-सभ्यता-संस्कृतियों का गहन विश्लेषण करके जो पदार्थ प्रस्तुत किया है, वह निस्सन्देह मानवमात्र की कल्याणयात्रा का निर्दुष्ट पाथेय है।

मनुष्य जहाँ भी है और जिस स्थिति में है, उसकी अपनी सामाजिक मान्यताएँ हैं और धार्मिक आस्था है। यद्यपि वह आस्तिक नास्तिक रूप से विभक्त है तथापि उसके अन्दर कर्मकाण्ड किसी न किसी रूप में अवश्य

ही विद्यमान है और उसी के अनुरूप उसकी जीवन पद्धति है। हमारे आचार्यों ने धर्म के जिस व्यापक स्वरूप की परिकल्पना की है वैसी अन्य धार्मिक मतावलम्बियों में दुर्लभ है। इस सन्दर्भ में आचार्य द्विवेदीजी ने धार्मिक मतवादों की समीक्षा करते हुए 'सेकुलरिज्म' अथ च, 'धर्म निरपेक्षता' शब्द और उसके प्रायोगिक अर्थ पर विचार किया है। उनका मत है कि भारत के राजनीतिक-परिवेश में इसके अर्थ के विषय में भ्रान्ति है; अत: इसका दुरुपयोग हो रहा है। इसी तारतम्य में उन्होंने उदारवादियों द्वारा प्रचारित 'सर्वधर्म समभाव' को भी परखा और इसे खारिज कर बिल्कुल ठीक किया है। मैं उनसे सहमत हूँ कि 'सर्वधर्म समभाव' केवल कहने भर के लिए है, व्यवहार में यह शब्द एकदम बेमानी है। इस शब्द के स्थान पर 'सर्वधर्म-समादर' का प्रयोग अधिक व्यावहारिक और तर्कसङ्गत होगा।

'एक विश्व एक संस्कृति'—यह शीर्षक निश्चय ही चौंकाने वाला है। प्रथम दृष्टया इसे सुनने और पढ़ने पर कोई भी बुद्धिजीवी सोच सकता है कि विश्व तो एक ही है, कई विश्व तो हैं नहीं और फिर, समस्त विश्व की एक संस्कृति कैसे हो सकती है? क्योंकि हर देश, जाति और समाज के अपने अलग भौतिक-आध्यात्मिक परिवेश हैं। किन्तु इस ग्रन्थ का सम्यक् अध्ययन करने के पश्चात् दृष्टि साफ हो जाती है और लेखक का इस शीर्षक के पीछे छिपा हुआ दृष्टिकोण भी स्पष्ट हो जाता है। 'एक विश्व' और 'एक संस्कृति' के सम्बन्ध में विद्वान् लेखक ने अपनी धारणा स्पष्ट की है। उनके 'एक विश्व' की अवधारणा का अभिप्राय है कि सभी धर्मों के परस्पर सामंजस्य से मानव-मात्र में परस्पर सौहार्द बने—यही वैश्विक एकता ही 'एक विश्व' की परिकल्पना को साकार कर सकती है। इसी प्रकार लेखक का यह मानना है कि विकास के इस युग में जब मानवता की रक्षा के लिए अध्यात्म और विज्ञान का सन्तृप्त समन्वय होगा तभी 'एक संस्कृति' का निर्माण सम्भव है। वस्तुत: ये दोनों ही परम आदर्श स्थितियाँ हैं; दुर्लभ अवश्य हैं किन्तु अलभ्य भी नहीं कहा जा सकता।

ग्रन्थ में विषयवस्तु का प्रतिपादन बड़े ही तार्किक ढंग और प्रामाणिक रीति से किया गया है। कहीं भी भाव शैथिल्य दृष्टिगोचर नहीं होता और लेखक की शास्त्र प्रौढ़ि तथा अनुभवजन्य आत्मविश्वास पदे-पदे परिलक्षित होता है। उनकी प्रखर प्रतिभा और स्पष्टवादिता आदि से अन्त तक मुखरित है। वे अपने कथ्य को समीचीन शब्दों के साँचे में ढाल कर और हिये तराजू तौल कर ही प्रकट करते हैं। इस तरह उनकी प्रतिपादन शैली की अद्वितीयता विषय को पाठकों के लिए सहज ही ग्राह्य बना देती है। मेरा ऐसा मानना है कि कोई भी बुद्धिजीवी इस ग्रन्थ को पढ़कर आचार्य द्विवेदीजी से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता। मेरा विनम्र सुझाव है कि इस महत्त्वपूर्ण कृति का, जो एक नवीन दृष्टि से संवलित है, अंग्रेजी एवं अन्यान्य भाषाओं में भी अनुवाद होना चाहिए ताकि यह विश्व के आत्मकल्याण में प्रशस्त योगदान कर सके और विद्वान् लेखक का साध्यवसाय श्रम भी सार्थक हो। आचार्य द्विवेदीजी की यह कृति मनुस्मृति से प्रारम्भ हुए उस विश्व सन्देश की एक कड़ी है जिसमें कहा गया है कि इस भारत देश में उत्पन्न हुए विद्वान् ब्राह्मणों ने पृथिवीमण्डल के प्रत्येक मानव को उसके चरित्र की शिक्षा दी है—''एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मन:। स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवा: ॥''

इस प्रकार संक्षेपत: यहाँ समीक्ष्य ग्रन्थ के विषयवस्तु की प्रासङ्गिकता, ग्राह्यता और महत्त्व के आकलन के साथ ही विषय के प्रतिपादन और लेखकीय दृष्टिकोण के सम्बन्ध में भी विचार प्रस्तुत किया गया। अध्येता जब इस ग्रन्थ का (बिना किसी पूर्वाग्रह के) अनुशीलन करेंगे तो पायेंगे कि मेरी यह समीक्षा प्रशंसात्मक कत्तई नहीं है। हीरा जिस कोटि का है, उसे उस कोटि का कहना, हीरे की प्रशंसा करना नहीं कहा जा सकता। इस ग्रन्थ की हृदयग्राही स्वोपज्ञ उद्भावनायें इसी दृष्टि से परखी जानी चाहिए। विद्वान् लेखक के कथन (प्रस्तावना, पृ० xii) को इस सन्दर्भ में उद्धृत करना समीचीन होगा—''सही समालोचना को स्वीकार कर लेना भारतीय संस्कृति का विशेष गुण है।''

'पूरी प्रबुद्ध भारतीयता को समर्पित' यह विशिष्ट ग्रन्थ सम्पूर्ण मानव जाति के लिए उपादेय है। अत:, प्रत्येक सभ्य और संस्कृत प्रबुद्ध जन के द्वारा संग्रहणीय, पठनीय और मननीय है। ग्रन्थ की अन्तर्वस्तु जितनी गम्भीर है उतना ही सौम्य इसका बाह्य स्वरूप है। आकर्षक साजसज्जा, अनाविल मुद्रण और अनतिपीन चारु कलेवर वाले इस ग्रन्थ का मूल्य रु० एक सौ पचास कहीं से भी अनुचित नहीं लगता। यह अप्रतिम कृति लेखक और प्रकाशक को यश:समृद्धि प्रदान करे, यही भगवान् विश्वेश्वर से प्रार्थना है।

— प्रभुनाथ द्विवेदी

अध्यात्मपरक ग्रन्थ

मनीषी, संत, महात्मा

शिवस्वरूप बाबा हैड़ाखान *सद्गुरुप्रसाद श्रीवास्तव* 150.00
नीब करौरी के बाबा *डॉ० बदरीनाथ कपूर* 12.00
उत्तराखण्ड की सन्त परम्परा *डॉ० गिरिराज शाह* 150.00
सोमबारी महाराज *हरिश्चन्द्र मिश्र* 50.00
सन्त रैदास *श्रीमती पद्मावती झुनझुनवाला* 60.00
सूर्य विज्ञान प्रणेता योगिराजाधिराज स्वामी विशुद्धानन्द परमहंसदेव : जीवन और दर्शन *नन्दलाल गुप्त* 140.00
Yogirajadhiraj Swami Vishuddhanand Paramhansdeva : Life & Philosophy *N.L. Gupta* 400.00
योगिराज विशुद्धानन्द प्रसंग तथा तत्त्व कथा *म०म०पं० गोपीनाथ कविराज* 250.00
पुराण पुरुष योगिराज श्रीश्यामाचरण लाहिड़ी *सत्यचरण लाहिड़ी* 120.00
Purana Purusha Yogiraj Sri Shayama Charan Lahiree *Dr. Ashok Kr. Chatterjee* 400.00
योग एवं एक गृहस्थ योगी : योगिराज सत्यचरण लाहिड़ी *शिवनारायण लाल* 150.00
करुणामूर्ति बुद्ध *डॉ० गुणवन्त शाह* 25.00
महामानव महावीर *डॉ० गुणवन्त शाह* 30.00
योगिराज तैलंग स्वामी *विश्वनाथ मुखर्जी* 40.00
ब्रह्मर्षि देवराहा-दर्शन *डॉ० अर्जुन तिवारी* 50.00
भारत की महान साधिकाएँ *विश्वनाथ मुखर्जी* 40.00
भारत के महान योगी (भाग 1-10) 5 जिल्द में *विश्वनाथ मुखर्जी (प्रत्येक)* 100.00
महाराष्ट्र के संत-महात्मा *ना०वि० सप्रे* 120.00
शिवनारायणी सम्प्रदाय और उसका साहित्य *डॉ० रामचन्द्र तिवारी* 100.00
महात्मा बनादास : जीवन ओर साहित्य *डॉ० भगवतीप्रसाद सिंह* 60.00
पूर्वांचल के संत महात्मा *परागकुमार मोदी* 70.00

अध्यात्म, योग, तंत्र, दर्शन

गङ्गा : पावन गङ्गा *डॉ० शुकदेव सिंह* 25.00
कथा त्रिदेव की *रामनगीना सिंह* 50.00
पूर्ण कामयोग (कामना-सिद्धि और ध्यान के रहस्य) *गुरुश्री वेदप्रकाश* 120.00
उत्तिष्ठ कौन्तेय *डॉ० डेविड फ्राली, अनु० केशवप्रसाद कार्याँ* 150.00
सब कुछ और कुछ नहीं *मेहेर बाबा* 60.00
सृष्टि और उसका प्रयोजन *मेहेर बाबा* 65.00
वाग्विभव *प्रो० कल्याणमल लोढ़ा* 200.00
वाग्दोह *प्रो० कल्याणमल लोढ़ा* 200.00
गुप्त भारत की खोज *पाल ब्रंटन* 200.00
मारणपात्र *अरुणकुमार शर्मा* 250.00
वह रहस्यमय कापालिक मठ '' 180.00
तिब्बत की वह रहस्यमयी घाटी '' 180.00
मृतात्माओं से सम्पर्क '' 200.00
तीसरा नेत्र (प्रथम खण्ड) '' 250.00
तीसरा नेत्र (द्वितीय खण्ड) '' 300.00
मरणोत्तर जीवन का रहस्य '' 300.00
परलोक विज्ञान '' 300.00
कुण्डलिनी शक्ति '' 250.00
बृहत श्लोक संग्रह *प्रो० कल्याणमल लोढ़ा* 200.00
साधना और सिद्धि *डॉ० कपिलदेव द्विवेदी* 200.00
स्वामी दयानन्द जीवनगाथा *डॉ० भवानीलाल भारतीय* 120.00
सनातन हिन्दू धर्म और बौद्ध धर्म *श्यामसुन्दर उपाध्याय* 75.00
धर्म, दर्शन और विज्ञान में रहस्यवाद *प्रो० कल्याणमल लोढ़ा, डॉ० वसुन्धरा मिश्र* 250.00
सोमतत्त्व *सं० प्रो० कल्याणमल लोढ़ा* 100.00
श्रीकृष्ण : कर्म दर्शन *शारदाप्रसाद सिंह* 40.00

जपसूत्रम (प्रथम खण्ड व द्वितीय खण्ड)
स्वामी श्री प्रत्यगात्मानन्द सरस्वती (प्रत्येक) 150.00

वेद व विज्ञान
स्वामी श्री प्रत्यगात्मानन्द सरस्वती 180.00

रावण की सत्यकथा *रामनगीना सिंह* 60.00

कृष्ण और मानव सम्बन्ध (गीता) *हरीन्द्र दवे* 80.00

कृष्ण का जीवन संगीत *डॉ० गुणवंत शाह* 300.00

सृष्टि और उसका प्रयोजन *शिवेन्द्र सहाय* 65.00

हिन्दी ज्ञानेश्वरी *अनु० ना० वि० सप्रे* 180.00

श्रीमद्भगवद्गीता (3 खण्डों में)
श्री श्यामाचरण लाहिड़ी 375.00

संत कबीर और भगताही पंथ
डॉ० शुकदेव सिंह 130.00

कथा राम कै गूढ़ (तुलसी)
डॉ० रामचन्द्र तिवारी 125.00

संतो राह दुओ हम दीठा (कबीर)
सं० डॉ० भगवानदेव पाण्डेय 150.00

कृष्नायन *रामबदन राय* 200.00

वाग्दोह *प्रो० कल्याणमल लोढ़ा* 200.00

श्यामाचरण क्रियायोग व अद्वैतवाद
अशोककुमार चट्टोपाध्याय 100.00

अनंत की ओर *अशोककुमार* 90.00

रामायण-मीमांसा *करपात्रीजी महाराज* 250.00

भक्ति-सुधा *करपात्रीजी महाराज* 190.00

श्रीभागवत-सुधा *करपात्रीजी महाराज* 70.00

श्रीराधा-सुधा *करपात्रीजी महाराज* 50.00

भ्रमर-गीत *करपात्रीजी महाराज* 90.00

गोपी-गीत *करपात्रीजी महाराज* 200.00

म०म०पं० गोपीनाथ कविराज के प्रमुख ग्रन्थ

भारतीय धर्म साधना 80.00

क्रम-साधना 80.00

अखण्ड महायोग 80.00

श्रीकृष्ण प्रसंग 250.00

योगिराज विशुद्धानन्द प्रसंग तथा तत्त्व कथा 130.00

शक्ति का जागरण और कुण्डलिनी 100.00

श्री साधना 50.00

दीक्षा 80.00

सनातन-साधना की गुप्तधारा 100.00

साधु दर्शन एवं सत्प्रसंग (भाग 1, 2) 80.00

साधु दर्शन एवं सत्प्रसंग (भाग 3) 50.00

मनीषी की लोकयात्रा (म०म०पं० गोपीनाथ कविराज का जीवन दर्शन) 300.00

कविराज प्रतिभा 64.00

ज्ञानगंज 60.00

प्रज्ञान तथा क्रमपथ 80.00

तन्त्राचार्य गोपीनाथ कविराज और योग-तन्त्र साधना 50.00

परातंत्र साधना पथ 40.00

भारतीय संस्कृति और साधना (भाग 1) 200.00

भारतीय संस्कृति और साधना (भाग 2) 120.00

अखण्ड महायोग का पथ और मृत्यु विज्ञान 40.00

काशी की सारस्वत साधना 35.00

भारतीय साधना की धारा 30.00

कविराज प्रतिभा 64.00

योग, स्वास्थ्य एवं व्यक्तित्व

योग साधना (80 चित्रों सहित)
दुर्गाशंकर अवस्थी 120.00

योग के विविध आयाम *डॉ० रामचन्द्र तिवारी* 40.00

दीर्घायु के रहस्य *डॉ० विनयमोहन शर्मा* 50.00

अपने व्यक्तित्व को पहचानिए
डॉ० सत्येन्द्रनाथ राय 50.00

साधना और सिद्धि *डॉ० कपिलदेव द्विवेदी* 250.00

पुस्तकें प्राप्त

वेद प्रकाश 'बटुक' प्रवासी भारतीय की काव्य-कृतियाँ

उत्तर राम-कथा 100.00
संवेदनशील महामानव राम के जीवन के मार्मिक प्रसंग पर आधारित खण्ड-काव्य

इतिहास की चीख़ 200.00
वर्तमान के संदर्भ में पीड़ा और विद्रोह को व्यक्त करतीं कविताएँ

बाहुबली 100.00
आदि तीर्थंकर की ऋषभदेव के दो बेटों—भरत और बाहुबली की कथा पर आधारित खण्डकाव्य

भारती साहित्य प्रकाशन
286, चाणक्यपुरी, सदर
मेरठ-250 001

भारतीय वाङ्मय
मासिक

वर्ष : 4 **अगस्त 2003** **अंक : 8**

प्रधान सम्पादक
पुरुषोत्तमदास मोदी

सम्पादक
परागकुमार मोदी

वार्षिक शुल्क
रु० 30.00

अनुरागकुमार मोदी
द्वारा
विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
के लिए प्रकाशित

वाराणसी एलेक्ट्रॉनिक कलर प्रिण्टर्स प्रा० लि०
वाराणसी
द्वारा मुद्रित

E-mail : sales@vvpbooks.com
Website : **www.vvpbooks.com**

डाक रजिस्टर्ड नं० ए डी-174/2003 RNI No. UPHIN/2000/10104
प्रेस रजिस्ट्रेशन एक्ट 1807 ई० धारा 5 के अन्तर्गत
Licenced to post without prepayment at
G.P.O. Varanasi
Licence No. LWP-VSI-01/2001

सेवा में,

प्रेषक : (If undelivered please return to :)

विश्वविद्यालय प्रकाशन
प्रमुख प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रेता
(विविध विषयों की हिन्दी, संस्कृत तथा अंग्रेजी पुस्तकों का विशाल संग्रह)
विशालाक्षी भवन, पो०बाक्स 1149
चौक, वाराणसी-221 001 (उ०प्र०) (भारत)

VISHWAVIDYALAYA PRAKASHAN
Premier Publisher & Bookseller
(BOOKS IN HINDI, SANSKRIT & ENGLISH FOR STUDENTS, SCHOLARS, ACADEMICIANS & LIBRARIAN)
Vishalakshi Building, P.O. Box : 1149
Chowk, VARANASI-221 001(U.P.) (INDIA)

: Offi. : (0542) 2421472, 2353741, 2353082, (Resi.) 2436349, 2436498, 2311423 ● Fax : (0542) 2353082